## B.A (Hons) part-2.

**Subject-Hindi**

**Paper-(composition 100marks)**

**UG**

**Topics-कुरुक्षेत्र की महत्वपूर्ण व्याख्येय,परीक्षोपयोगी पंक्तियाँ।**

**Dr.Prafull kumar,HOD, Hindi Department RRS College Mokama PPU Patna**

-" वह कौन रोता है वहाँ-- इतिहास के अध्याय पर,

जिसमें लिखा है, नौजवानों के लहू का मोल है--+-

जो आप तो लड़ता नहीं, कटवा किशोरों को मगर,

आश्वस्त होकर सोचता, सोनित बहा,

लेकिन गयी बच लाज सारे देश की।" (1) प्रथम सर्ग पृष्ठ 5 कुरुक्षेत्र

-"रुग्ण होना चाहता कोई नहीं, रोग लेकिन आ गया जब पास हो ,तिक्त औषधि के सिवा उपचार क्या? शमित होगा वह नहीं मिष्टान्न से।" पृष्ठ 17 द्वितीय सर्ग कुरुक्षेत्र

-" छीनता हो स्वत्व कोई, और तू त्याग- तप से काम ले यह पाप है।

पुण्य है विच्छिन्न कर देना उसे बढ़ रहा तेरी तरफ जो हाथ हो।"" पृष्ठ 18 द्वितीय सर्ग

-' शान्ति नहीं तब तक, जब तक सुख भाग न नर का सम हो,

नहीं किसी को बहुत अधिक हो, नहीं किसी को कम हो।"" पृष्ठ 25 तृतीय सर्ग

-"क्षमा, दया,तप,त्याग मनोबल, सबका लिया सहारा ;

पर न- व्याध्र सुयोधन तुमसे कहो, कहाँ कब हारा?।पृष्ठ 27 तृतीय सर्ग

-"क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो।

उसको क्या, जो दन्तहीन, विषरहित,विनीत, सरल हो। पृष्ठ 28 तृतीय सर्ग

"सच पूछो, तो शर में ही बसती है दीप्ति विनय की ,

सन्धि- वचन संपूज्य उसी का जिसमें शक्ति विजय की । पृष्ठ 28 तृतीय सर्ग

“सहनशीलता, क्षमा दया को तभी पूजता जग है,

बल का तर्क दमकता उसके पीछे जब जगमग है। पृष्ठ  29

“ किन्तु, हाय, आधे पथ तक ही पहुँच सका यह जग है,

अभी शान्ति का स्वप्न दूर नभ में करता जगमग है।पृष्ठ 33 तृतीय सर्ग

“ शान्ति-बीन तब तक बजती है नहीं सुनिश्चित सुर में,

स्वर की शुद्ध प्रतिध्वनि जब तक उठे नहीं उर-उर में । पृष्ठ 34 तृतीय सर्ग

“पापी कौन मनुज से उसका न्याय चुराने वाला

या कि न्याय खोजते विघ्न का सीस उड़ाने वाला? पृष्ठ 36 तृतीय सर्ग

“  सहज ही चाहता कोई नहीं लड़ना किसी से,;

किसी को मारना अथवा स्वयं मरना किसी से ;

नहीं  दु:शान्ति को भी तोड़ना नर चाहता है;

जहाँ तक हो सके, निज शान्ति प्रेम निबाहता है ।पृष्ठ 38 चतुर्थ सर्ग

“ इच्छा नर की और, और फल देती उसे नियति है,

फलता विष पीयूष- वृक्ष में, अकत प्रकृति की गति है। पृष्ठ 40 चतुर्थ सर्ग

“सबसे बड़ा धर्म है नर का सदा प्रज्वलित रहना,

दाहक शक्ति समेट स्पर्श भी नहीं किसी का सहना। पृष्ठ 49 चतुर्थ सर्ग

“सच है बुद्धि कलश में जल है, शीतल सुधा सरल है,

पर, भूलो मत, कुसमय में हो जाता वहीं गरल है ।पृष्ठ 49 चतुर्थ सर्ग

“धर्म का दीपक , दया का दीप,कब जलेगा, कब जलेगा

विश्व में भगवान ? कब सु कोमल ज्योति से अभिसक्त हो,

सरस होंगे जली-सूखी रसा के प्राण ?

है बहुत बरसी धरित्री पर अमृत की धार,

पर नहीं अब तक सुशीतल  हो सका संसार।

भोग-लिप्सा आज भी लहरा रही उद्धाम,बह रही असहाय नर की भावना निष्काम। पृष्ठ 77 षष्ठ सर्ग

एक नर से दूसरे के बीच का व्यवधान तोड़ दे जो, है वहीं ज्ञानी, वही विद्वान, और मानव भी वही। पृष्ठ 82 षष्ठ सर्ग

रसवती भू के मनुज का श्रेय, यह नहीं विज्ञान,

विद्या- बुद्धि यह आग्नेय;

विश्व

-दाहक ,मृत्यु -वाहक, सृष्टि का संताप,

भ्रान्त पथ पर अन्य बढ़ते ज्ञान का अभिशाप। पृष्ठ 83षष्ठ सर्ग

“सावधान, मनुष्य ! यदि विज्ञान है तलवार,

तो इसे दे फेंक तज कर मोह स्मृति के पार ।पृष्ठ 86

मही नहीं जीवित है मिट्टी से डरने वालों से,

जीवित है वह उसे फूंक सोना करने वालों से।

ज्वलित देख पंचाग्नि जगत् से निकल भागता योगी।

धुनि बनाकर उसे तापता अनासक्त रसभोगी। पृष्ठ 86 सप्तम सर्ग

ऊँचा उठ देखो तो किरीट,राज, तप, जप,याग, योग से मनुष्यता महान है। धर्म-सिद्ध रूप नहीं भेद-भिन्नता का यहाँ, कोई भी मनुष्य किसी अन्य के समान है ।पृष्ठ 88 सप्तम सर्ग

जब तक मनुज- मनुज का यह सुख-भाग नहीं सम होगा,

शमित न होगा कोलाहल, संघर्ष नहीं कम होगा ।पृष्ठ 91 सप्तम सर्ग

सब हो सकते तुष्ट, एक- सा

सब सुख पा सकते हैं ,

चाहे तो, पल में धरती को स्वर्ग बना सकते हैं ।पृष्ठ 93 सप्तम सर्ग

दुर्लभ नहीं मनुज के हित, निज वैयक्तिक सुख पाना,

किन्तु कठिन है कोटि-कोटि मनुजों को सुखी बनाना।

एक पंथ है छोड़ जगत को अपने में रम जाओ,

खोजो अपनी मुक्ति और निज को ही सुखी बनाओ ।------

जिस तप से तुम चाह रहे पाना केवल निज सुख को, कर सकता है दूर

वही तप अमिऐ नरों के दुख को।पृष्ठ 105 सप्तम सर्ग

ऊपर सब कुछ शून्य-शून्य  है, कुछ भी नहीं गगन में,

धर्मराज! जो कुछ है, वह है मिट्टी में जीवन में ।पृष्ठ123 सप्तम सर्ग

“भोगो तुम इस भाँति मृत्ति को, दाग नहीं लग पाये,

मिट्टी में तुम नहीं, वही तुममें विलीन हो जाये ।पृष्ठ 124 सप्तम सर्ग

**संदर्भ- कुरूक्षेत्र-रामधारी सिंह दिनकर. संस्करण-1985 राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट दिल्ली।**

*******